॥ अथ ॥

हनुमान चालीसा

॥ प्रारम्भ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ अथ ॥

हनुमान चालीसा

॥ प्रारम्भः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्रीहनुमते नमः *

अथ हनुमानचालीसा ।

दोहा-श्रीगुरु चरण सरोज
रज, निजमन मुकुरसुधार ॥
वरणौं रघुबर बिमल यश, जो
दायक फलचार ॥ बुद्धिहीनतनु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानिके, सुमिरौंपवन कुमार।
बलबुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु चा०
कलेशविकार ॥

चौपाई। १

जय हनुमान ज्ञान गुणसा
गर। जै कपीशतिहुं लोकउजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर॥ राम दूत अतुलित बलधा-
मा। अंजनि पुत्र पवन सुत ना
मा॥ महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमतिके संगी॥
कंचन बरण विराज सुवेशा।
कानन कुंडल कुंचित केशा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । चा०
कांधे मूंज जनेऊ छाजै ॥ शं-
कर सुवन केसरी नंदन । तेज प्र
ताप महा जगबंदन ॥ विद्या
वान गुणी अतिचातुर । राम
काज करिबे को आतुर॥प्रभु च-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिसुनिवे को रसिया । राम ल
षण सीता मनवसिया ॥ सूक्ष्म
रूप धरिसियहिं दिखावा । विक
टरूपधरिलंकजरावा ॥ भीमरू
पधरि असुर संहारे । रामचन्द्र
केकाज संवारे ॥ लायसजीवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

लषण जिम्राये। श्रीरघुबीर हर-
षिउरलाये॥ रघुपतिकीनीबहुत
बड़ाई। तुम ममप्रियाभरतसम
भाई॥ सहस बदन तुमरो यश
गावैं। असकहि श्रीपति कण्ठ
लगावैं॥ सनकादिकब्रह्मादि मु

नीशा । नारद शारद सहित अ
हीशा ॥ यमकुबेर दिगपाल जा
हांते । कवि कोविद कहि सकैं
कहांते ॥ तुम उपकार सुग्रीवहिं
कीन्हा । राम मिलाय राज
पद दीन्हा ॥ तुमरो मँत्र बिभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बरा माना । लंकेश्वरभये सब
जगजाना ॥ युगसहस्र योजन
जो भानू॥लील्यो ताहिमधुर
फल जानू ॥ प्रभुमुद्रिका मेलि
मुखमाहीं । जलधि लांघिगो
अचरजनाहीं ॥ दुर्गम काज

जगत के जेते। सुगम अनुग्रह
तुमरे तेते॥ राम दुआरे तुमरख
वारे। होतन आज्ञा बिनु पैठारे॥
सबसुख लहै तुम्हारे शरना।
तुम रक्षक काहेको डरना॥ आ
पन तेज सम्हारो आपै। तीनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक हांक ते कापैं ॥ भूत पि
शाच निकट नहिं आवै । महा
बीर जब नाम सुनावै ॥ नाशै
रोग हरै सब पीरा । जपत नि-
रंतर हनुमत बीरा ॥ संकट सब
हनुमानछुड़ावैं । मनक्रमबचन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान जो लावैं ॥ सब पररामत
पश्चीराजा।तिनकेकाजसकल-
तुम साजा ॥ और मनोरथ
जो कोई लावै।तासु अमितजी-
वन फल पावै ॥ चारोयुगपरताप
तुम्हारा।हैपरिसिद्ध जगत उजि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरा ॥ राम रसायनँ तुम्हारेपी-
सा । सादर तुम रघुपति के चा०
दासा ॥ साधुसंतकेतुमरखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धिनवनिधि के दाता ।
अस बर दीन्ह जानकीमाता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हरो भजन रामको भावै ।
जन्म जन्म को दुख बिसरावै ॥
अंतकाल रघुपति पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुखकरई ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकट हरै मिटै सब पीरा । जो
सुमिरै हनुमत बल वीरा ॥ जै
जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा
करो गुरुदेवकीनाईं ॥ यह शत
बार पाठकरजोई । छूटै बंदि म-
हा सुख होई । जो यह पढ़ै हनु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मान चलीसा । होइ सिद्धि
साखी गौरीसा ॥ तुलसीदास
सदा हरि चेरा । कीजै दास
हृदय महँ डेरा ॥

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरण मंगल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूरति रूप । रामलषन सीता
सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।

॥ इति श्रीहनुमान चालीसा सम्पूर्ण ॥

अथ संकटमोचन हनुमानाष्टक
श्रीगणेशायनमः ॥ मत्तगयन्द
छन्द ॥ बालसमय रवि लीलि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लियो तब तिनहुं लोकभयो अ-
धियारो। यज्ञ गयो विहदेत भ-
यो यह संकटकाहुसेजातन टा-
रो॥देवन जाइ करी विनती तब
छांडि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नाहिं जानत है जग में यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकटमोचननाम तिहारो ॥१॥ बा०
बालि की त्रास कपीस बसे तेहि
जात महा प्रभु पन्थ निहारो।
चौकि महामुनि श्राप दियो
तब चाहिय कौन उपायबिचा
रो॥कैद्विज रूप लैश्राय महा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभुसों तुम तासुकोसंकटटारो ।
को० ॥२॥अँगद के संग कीश
अनेक गये सिय खोज कपीश
निवारो । जीवत ना बचिहौ
हमसों जु बिना सुधि ले इत
को पगु धारो ॥ हारि थकेतट-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंधु सबै ले आय सिया सुधि चा०
प्राण उबारो ॥ कोनहिं ॥ ३ ॥ राव-
ण त्रासदियो सियकोतब रक्षक
होकर शोक निवारो। ताहिसम-
यहनुमानमहा प्रभुजायमहार १०
जनिश्चरमारो ॥ मंगतसीयश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोकसो आगिसुदैप्रभुमुद्रिका
शोक निवारो ॥ कोनहिं० ॥४॥
बाण लग्यो उरलक्ष्मणके तब
प्राण तज्यो सुत रावण मारो।लै
गृह वैद्यसुखेन समेततभीगिरि
द्रोण सुबीर उपारो ॥ लायस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन श्रीहनुमान सुलक्ष्मण
के तुम प्राण उबारो ॥को ०॥५॥
रावण युद्ध प्रयानकियो तब ना
गकी फांससबैसिरडारो। श्रीरघु
नाथ समेतसबैदलदेखिकैमोह
भयोअति भारो। आनि खगेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तबैहनुमानसो बन्धन काटिके
कष्टनिवारो ॥को० ॥६॥ बंधुसमे
त जबै आहिरावण लै रघुनाथ
पतालसिधारो॥ देविहिं पूजिभ
ली बिधिसों बलिदेन दोऊजन
मन्त्रबिचारो ॥ जायसहायभये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तबहींमहिरावण सैन्यसमेतसं
हारो॥को०॥७॥ काजकिये बड़
देवनकेतुम बीरमहा प्रभु देखि
बिचारो ॥ कौन सो संकटमो
हि गरीबकोजो तुमसोंनहिंजा
तहँ टारो । बेगि हरो हनुमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महा प्रभु जो कछु संकट होय
हमारो ॥ को० ॥ ८ ॥

इति संकट मोचन समाप्तः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ श्रीरामअस्तुति प्रारम्भः ।

श्रीरामचन्द्रकृपालु भजुमन हरणभव भयदारुणम्
नवकंज लोचन कंजमुख करकंज पद कंजारुणम्॥
कंदर्प अगनित अमितछविनवनीलनीरजसुन्दरम्
पटपीतमनिहुंतडितरुचिसुचिनौमिजनकसुतावरम्।
भजुदीन बन्धुदिनेशदानव दनल दुष्टनिकन्दनम्॥
रघुनन्दआनन्दकन्दकोशलचन्ददशरथनन्दनम्
सिरमुकुटकुण्डलतिलक चारुऊदारअँगविभूषणम्
आजानु भुज सरचापधर संग्राम जित खरदूषणम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति वदतितुलसीदास शंकरशेषमुनिमन रंजनम्।
ममहृदयकंजनिवासकरुकामादिखलदलगंजनम्॥
मनजाहिराचो मिलहिं सोबर सहजसुन्दरसांवरो।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानतरावरो
इहिभांतिगौरिअसीससुनिसियसहितहियहर्षितअली
तुलसीभवानिहिंपूजिपुनिपुनिमुदितमनमंदिरचली
सो०-जानिगौरि अनुकूल. सियहियहर्षनजातकहि
मंजुल मंगल मूल, बाम अँग फरकन लगे ॥
सियावर रामचन्द्र की जय ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ अथ श्रीरामाष्टक प्रारम्भः ॥

हे रामापुरुषोत्तमा नरहरे नारायणःकेशवा ॥१॥ आ-
गोविन्दा गरुड़ध्वजागुणनिधेदामोदरामाधवा ॥२॥
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ॥३॥
वैकुण्ठादिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ॥४॥
आदौरामतपोवनादिगमनं हत्वामृगाकाञ्चनम् ५
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ॥६॥
बाली निर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम् ॥७॥
पश्चाद्रावण कुम्भकर्ण हननंतद्धिरामायणम् ८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति ॥

हनुमान चालीसा

॥ समाप्तः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तक मिलने का पता:— आंच,

स्टार आफ इण्डिया प्रिंटिंग प्रेस,

पांडे हौली बनारस सिटी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri